UGC Approved - 45554 Sangeet Galaxy
Vol. 7, Issue. 1 (January 2018) pp. 1-2 ISSN: 2319-9695

सम्पादकीय

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ जनवरी 2018 का अंक आपके सामने प्रस्तुत है.

बात शुरू करते है इस सवाल के साथ कि वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में प्रचलित semester system संगीत शिक्षा के लिए कितना उपयोगी सिद्ध हुआ है? संगीत शिक्षा का उस पर क्या प्रभाव पडा है? संगीत शिक्षक और विद्यार्थियों के इस सम्बन्ध में क्या अनुभव और विचार रहे है? इस पर विस्तृत रूप से चर्चा किया जाना प्रासंगिक है, क्योंकि semester system वर्ष 2009-2010 में लागू हुआ था. आज 2018 में आठ वर्ष के अंतराल में semester system हमारे लिए कितना उपयोगी सिद्ध हुआ है इसका मूल्यांकन जरूरी है.

semester system आने से पढने- पढ़ाने और सिखने सिखाने की परिपाटी में कई सारे परिवर्तन हो गए. एक साल के पाठ्यक्रम को विभाजित करके दो सेमेस्टर में बांटा गया. इसके समर्थन में बहुत सारे तर्क दिए गए. जैसे एक साल के पाठ्यक्रम का बोझ ज्यादा होता है उसको आधा आधा करके पढ़ने से विद्यार्थी विषय को आसानी से समझ पाएगा और उसके पढने और सीखने की क्षमता में विकास होगा. साल में दो बार परीक्षा होने से उसका साल में दो बार मूल्यांकन हो सकेगा, जिससे उसके शैक्षणिक विकास में मदद मिलेगी. semester system लागू होने से विद्यार्थी में regular study habit विकसित होगी. छोटा पाठ्यक्रम होने से विद्यार्थी विषय को और उसकी तकनीक को बेहतर ढंग से समझ सकता है, आदि आदि.....

वैसे ये सारी बातें सुनने में बड़ी अच्छी लगती है पर हकीकत की जमीन पर ये कहाँ तक सफल हो सकी है ये देखना भी जरूरी है. semester system में समय का सबसे ज्यादा आभाव पाया गया है. जिस कारण पाठ्यक्रम पूरा ही नहीं हो पता है, यहाँ तक की extra class के लिए भी समय निकाल पाना मुश्किल होता है. वैसे कहने को semester छह महीने का होता है लेकिन उसी छह महीने में पढाई के साथ admission, राष्ट्रीय और लोकल त्योहारों की छुट्टियाँ, जाड़े और गर्मी की छुट्टियाँ, शिक्षक की अपनी निजी छुट्टी आदि भी जुडी होती है. इसके अतिरिक्त semester system में अध्यापकों पर विद्यार्थियों के मूल्यांकन का बोझ बढ़ गया है क्योंकि परीक्षा साल में दो बार लेनी पड़ती है. इस तरह की तमाम विसंगतियां है जिन्होनें शिक्षा को प्रभावित किया है.

संगीत एक प्रदर्शनकारी कला है. प्रदर्शन के लिए सीखना पड़ता है और उसे कड़ी मेहनत से साधना भी पड़ता है. तब कही जाकर एक विद्यार्थी मंच पर अपनी कला का प्रदर्शन कर पता है. क्या एक semester में किसी राग या ताल आदि को सीख कर एक विद्यार्थी प्रदर्शन करने के योग्य हो पता है? निश्चित रूप से नहीं. तो संगीत जैसी प्रदर्शन कारी कला की शिक्षा में semester system

की क्या आवश्यकता? प्रश्न विचारणीय है. वैसे एक मजेदार बात यह है कि जब semester system लागू हुआ था तब संस्थानों में संगीत शिक्षकों द्वारा संगीत शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाए गए थे और लगभग सभी ने एक स्वर में इसके प्रति नाराजगी जताई थी, लेकिन किसी भी हमारे महान वरिष्ठ शिक्षक या शिक्षक समूह ने ugc तक इस बात को पहुचाने का सिरदर्द नहीं लिया कि semester system संगीत जैसी प्रदर्शनकारी विधा के लिए आप्रसंगिक है. तो एक तरफ semester system की निंदा चल रही है और दूसरी तरफ semester system जैसे तैसे चल रहा है.

खैर जो हुआ सो हुआ...... अब कम से कम विश्वविद्यालयों में semester system की प्रासंगिकता पर शोध होना चाहिए ताकि विसंगतियों को रेखांकित किया जा सकें और ugc का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया जा सके कि संगीत जैसी प्रदर्शनकारी विधा के लिए वार्षिक शिक्षा पद्धति ही ज्यादा प्रासंगिक है.

और अंत में....... अतिथि सम्पादन के लिए हम डॉ. मोनाली मसीह, पूना और डॉ. समिधा वेद्बाला, असिस्टेंट प्रोफेसर, सिक्किम विश्वविद्यालय तथा डॉ. सुदर्शना बरुआ, असिस्टेंट प्रोफेसर, धिबरूगढ़ विश्वविद्यालय का इस अंक के प्रकाशन में सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते है.